AD EDUXIAN JOURNAL

A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal

Google Scholar Indexing PIF: 1.048(I2OR), 3.125 (IIFS) & 3.8(SJIF)

Vol (3), Issue (3), July-September 2026 *ISSN: 3048-7951*

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के बी.एड. छात्राध्यापकों की सृजनशीलता में अंतर की सार्थकता का तुलनात्मक अध्ययन

प्रियंका पाण्डेय[1] और प्रो. अजय कुमार दुबे[2]

DOI: http://doi.org/10.5281/zenodo.22472620

Review: 25/07/2026 **Acceptance: 26/07/2026** **Publication: 07/09/2026**

सारः प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बी.एड. छात्राध्यापकों की सृजनशीलता में अंतर की सार्थकता का तुलनात्मक अध्ययन करना है। वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में सृजनशीलता को एक महत्वपूर्ण शैक्षिक गुण माना जाता है, क्योंकि यह भावी शिक्षकों में नवीन चिंतन, मौलिकता, कल्पनाशीलता, समस्या–समाधान तथा नवीन शिक्षण–विधियों के प्रयोग की क्षमता विकसित करने में सहायक होती है। इस अध्ययन में उत्तर प्रदेश के वाराणसी मंडल के महाविद्यालयों में बी.एड. कार्यक्रम में अध्ययनरत कला वर्ग के कुल 300 छात्राध्यापकों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया, जिसमें 150 ग्रामीण एवं 150 शहरी छात्राध्यापक सम्मिलित थे। सृजनशीलता के मापन हेतु डॉ. के. एन. शर्मा द्वारा निर्मित बैटरी ऑफ डाइवर्जेंट प्रोडक्शन एबिलिटीज (DPA) का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों के अनुसार ग्रामीण छात्राध्यापकों का औसत सृजनशीलता अंक 82.39 तथा मानक विचलन 20.069 पाया गया, जबकि शहरी छात्राध्यापकों का औसत 84.85 तथा मानक विचलन 21.032 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के औसत अंकों के मध्य अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए C-R- परीक्षण का प्रयोग किया गया, जिसमें C-R- मान 1.037 प्राप्त हुआ, जो 0.05 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं था। अतः अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि ग्रामीण एवं शहरी बी.एड. छात्राध्यापकों की सृजनशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्रमुख शब्दः सृजनशीलता, बी.एड. छात्राध्यापक, ग्रामीण क्षेत्र, शहरी क्षेत्र, तुलनात्मक अध्ययन, नवीन चिंतन, समस्या–समाधान, शिक्षक–प्रशिक्षण।

प्रस्तावना

जब से धरा पर मानव का प्रकटन हुआ है, रहस्यों एवं विस्मओं की गुत्थिओं को सुलझाने में सतत प्रयत्नशील रहा आज भी वह अपनी जिज्ञासा व ज्ञान पिपासा कि क्षुधा को शांत नही कर पाया है। प्राचीन काल से ही भारतीय ज्ञान परम्परा में भाँति–भाँति के पथों पर गमन करते हुये ऋषियों मुनियों ने श्रृष्टि के रहस्यों के प्रति अपनी जिज्ञासा का रहस्योद्घाटन करने का उद्यम किया जिसके कारण हमारी सभ्यता व संस्कृति इतनी उत्कृष्ठ परिष्कृत एवं वसुधैव कुटुम्बकम के भाव से संपृप्त है। "सृजनशीलता" शब्द "सृजन" से बना है। "सृजन" का अर्थ है शून्य से किसी नवीन रचना का निर्माण, किसी नये रूप, विचार या अवधारणा को जन्म देना। सृजनशीलता मानव की वह अंतर्निहित क्षमता है जिसके माध्यम से वह नये–नये

[1]शोधार्थी, शिक्षक शिक्षा विभाग, टी०डी०पी०जी० कालेज, जौनपुर (उ०प्र०)

[2] प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, टी०डी०पी०जी० कालेज, जौनपुर (उ०प्र०)/(डीन, शिक्षा संकाय, वी०ब० सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ०प्र०)

विचारों, कल्पनाओं तथा प्रतीत होने वाली असंभव स्थितियों को सार्थक समाधान में परिवर्तित करता है। अर्थात् सृजनशीलता केवल विचारों का संग्रह नहीं, बल्कि संसार को नये ढंग से समझने, देखने तथा बदलने की शक्ति है। NEP 2020 में उच्चतर शिक्षा के व्यापक ढ़ाँचे में रचनात्मकता को सुनिश्चित करने के लिए सस्थानों और संकायों को पाठ्यक्रम शिक्षण विधि और आकलन आदि पर नवचान करने की स्वायत्तता देनी होगी। छात्राध्यापिकों के लिए एक समान मानकों के बनाये रखने के लिए अध्यापक शिक्षा प्रदान करने वाले उच्चतर शिक्षण संस्थान शिक्षा और इससे सम्बन्धित विषयों के साथ ही विशेष विषयों में विशेषज्ञता को सुनिश्चित करेगें।

सृजनात्मकता का तात्पर्य समस्या–समाधान से भी जोड़ा जाता है। ऐसी समस्या जिसके समाधान के लिए व्यक्ति प्रतिमानों से बाहर निकलकर नए उपाय, नई विधियों एवं नई स्थितियों का निर्माण करता है, वहीं सृजनात्मकता की वास्तविक अभिव्यक्ति होती है। सृजनशील व्यक्ति प्रचलित धारणाओं को यथावत स्वीकार नहीं करता, वह उन धारणाओं को चुनौती देता है और अपनी नई सोच के आधार पर ''अप्रत्याशित से अपेक्षित'' की यात्रा करता है। भारत सरकार सृजनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए विद्यालयों में 15 हजार स्कूल एवं 500 कालेजों मे **AVGC content creator** प्रयोगशालायें बनायी जा रही है जिसके माध्यम से एनिमेशन गेमिंग को बढावा दिया जायेगा।

यही कारण है कि शिक्षा के क्षेत्र में सृजनशीलता का विकास आज अत्यंत आवश्यक माना जा रहा है, क्योंकि शिक्षा का उद्देश्य केवल तथ्यों का संप्रेषण नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में नवीन चिंतन, मौलिकता, कल्पनाशीलता तथा सृजनात्मक समाधान की क्षमता विकसित करना है। आज के ज्ञान–आधारित समाज में, जहाँ प्रत्येक क्षेत्र निरंतर परिवर्तनशील है, सृजनशीलता मानव विकास का आधार स्तम्भ है। विज्ञान, तकनीक, साहित्य, कला, प्रबंधन, शिक्षा, संचार के क्षेत्र में उन्नति उन्हीं लोगों ने की है, जिनमें प्रयोगधर्मिता, नवोन्मेषण और रचनात्मक दृष्टि की क्षमता रही है। इस प्रकार सृजनशीलता का विकास न केवल व्यक्ति के व्यक्तिगत विकास के लिए, बल्कि राष्ट्र और समाज के विकास के लिए भी अनिवार्य है।

शोध का औचित्य

विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का विकास मुख्यतः शिक्षक के सक्रिय प्रयासों पर निर्भर करता है। शिक्षक यदि कक्षा में ''अनुकूल, मुक्त, प्रयोगधर्मी तथा प्रेरक वातावरण'' निर्मित करता है तो विद्यार्थियों की सृजनशील क्षमताएँ स्वतः विकसित होने लगती हैं। इसलिए शिक्षक को स्वयं भी ''सृजनात्मक प्रवृत्ति सम्पन्न, नवीन विचारों को स्वीकार करने वाला, तथा नवीन विधियों का प्रयोग करने वाला'' होना आवश्यक है। शिक्षण में विविध शिक्षण सामग्री, शिक्षण सहायक मीडिया तथा नवीन तकनीकों का उपयोग करके शिक्षक विशेषतः ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की रचनात्मक सोच, कल्पनाशीलता और अभिव्यक्ति क्षमता को प्रभावशाली ढंग से विकसित कर सकता है।

सृजनात्मकता की पुष्टि करते हुए **मैस्लो** (1958) ने कहा है कि '"आत्मानुभूति व्यक्ति की आधारभूत आवश्यकता है और यही सृजनात्मक व्यक्ति की प्रमुख विशेषता है।"' वर्तमान समय में वैज्ञानिक अनुसंधान, तकनीकी नवाचार, स्टार्ट–अप संस्कृति तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धा के युग में सृजनशील व्यक्तियों की खोज और उनका संवर्धन अत्यन्त आवश्यक हो गया है। सुनील कुमार मिश्र शोधार्थी शिक्षा संकाय 2023 में अपने शोध निष्कर्ष में पाया कि– सी0बी0एस0ई0 विद्यालयों द्वारा आधुनिक एवं उचित अधिगम शिक्षण प्रकिया को अपनायें जाने के कारण सृजनात्मकता का स्तर विद्यार्थियों में उच्च पाया जाता है।

सृजनात्मकता वह क्षमता है जो किसी समस्या का नवीन, मौलिक, लचीलेपन से युक्त तथा परिस्थितियों के अनुरूप समाधान प्रस्तुत करने में सहायक होती है। रचनात्मक उत्पादन में 'मौलिकता, विस्तारण, प्रवाहता एवं लचीलापन' जैसे कारक प्रमुख रूप से विद्यमान रहते हैं। **गिल्फोर्ड (1959)** के अनुसार '''"सृजनशीलता बालकों में सामान्य विशेषता है"'', इनमें प्रवाहता, लचीलापन, प्रेरणा तथा समन्वय की योग्यता विशेष रूप से पायी जाती है। अतः आवश्यकता है कि शिक्षक इन क्षमताओं की पहचान कर उनका पोषण करे।

अध्ययन का उद्देश्य:

बी.एड. छात्राध्यापकों ग्रामीण एवं शहरी की सृजनशीलता में अन्तर की सार्थकता ज्ञात करना।

परिकल्पना

- ग्रामीण एवं शहरी बी.एड. छात्राध्यापकों की सृजनशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

जनसंख्या

उत्तर प्रदेश के बी०एड्० कार्यक्रम में अध्ययनरत् समस्त छात्राध्यापक का शोध की जनसंख्या हैं।

न्यादर्श

वाराणसी मण्डल के महाविद्यालयों में बी०एड्० कार्यक्रम में अध्ययनरत् कला वर्ग के 300 छात्राध्यापकों (150 ग्रामीण एवं 150 शहरी) का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि द्वारा किया गया है।

उपकरण–

सृजनशीलता मापन के लिए डॉ० के०एन० शर्मा द्वारा निर्मित बैटरी ऑफ डाइवर्जेन्ट प्रोडक्शन एबिलिटीज (DPA) का प्रयोग किया गया है।

परिणाम–

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के बी०एड० छात्राध्यापकों की सृजनशीलता में अन्तर की सार्थकता

क्षेत्र	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रता मात्रा	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
ग्रामीण	150	82.39	20.069	298	1.037	0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
शहरी	150	84.85	21.032			

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. छात्राध्यापकों की सृजनशीलता का माध्य (Mean) 82. 39 एवं मानक विचलन (S.D.) 20.069 पाया गया, जबकि शहरी क्षेत्र के छात्राध्यापकों का माध्य 84.85 तथा मानक विचलन

21.032 प्राप्त हुआ। दोनों माध्यों के मध्य अंतर की सार्थकता ज्ञात करने हेतु C.R परीक्षण का प्रयोग किया गया, जिससे C.R. प्राप्तांक 1.037 प्राप्त हुआ, जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया। अतः यह स्पष्ट है कि ग्रामीण एवं शहरी छात्राध्यापकों की सृजनशीलता में कोई विशेष अंतर नहीं है। इस प्रकार शोध हेतु परिकल्पना संख्या 5 स्वीकृत की जाती है। प्राप्त परिणामों से यह भी स्पष्ट होता है कि बी.एड. छात्राध्यापकों की सृजनशीलता में क्षेत्राधारित भिन्नता नहीं पायी गई है।

अध्ययन के परिणाम इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि ''शैक्षिक मित्रता, सहकारी वातावरण, परस्पर संवाद, विचार–विमर्श और सहभागिता आधारित गतिविधियाँ'' छात्राध्यापकों की सृजनशीलता में वृद्धि करने में अत्यंत सहायक होती हैं। विद्यालयों तथा शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में सह–पाठ्यक्रमीय कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, माइक्रो–टीचिंग, सिमुलेशन, प्रोजेक्ट–वर्क आदि के माध्यम से छात्रों को सृजनात्मक अभिव्यक्ति के अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए। विद्यार्थियों को विद्यालय स्तर पर सृजनात्मक वातावरण निर्मित करते हुए उनके व्यक्तित्व विकास हेतु उपयुक्त दिशा में प्रेरित एवं मार्गदर्शित करना आवश्यक है। आज के समय में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT), इंटरनेट और डिजिटल संसाधनों की व्यापक उपलब्धता ने ग्रामीण और शहरी अंतर को काफी हद तक कम कर दिया है। परिणामस्वरूप दोनों क्षेत्रों के बी.एड. छात्राध्यापक समान रूप से नवीन विचारों, विधियों एवं प्रविधियों से परिचित हो रहे हैं। अतः स्वाभाविक रूप से दोनों क्षेत्रों के बी.एड. छात्राध्यापकों की सृजनशीलता में कोई सार्थक अंतर दिखाई नहीं देता।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थिनी द्वारा यह पाया गया है कि बी.एड. प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अंतर्गत संचालन किए जाने वाले विविध क्रियाकलाप, प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव डालते हैं। बी.एड. कार्यक्रम में सृजनशीलता एक महत्वपूर्ण गुण माना गया है, जो भावी शिक्षकों में अवश्य पाया जाना चाहिए। बी.एड. कक्षाओं में अध्ययनरत् छात्राध्यापक, शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से एक उत्तम शिक्षक बनने के लिए आवश्यक कौशलों एवं गुणों का अर्जन करते हैं। इन्हीं गुणों में सृजनशीलता युक्त अभिवृत्ति एक अनिवार्य तत्व के रूप में उल्लेखनीय है। एक सृजनशील छात्राध्यापक ही कक्षा–शिक्षण व्यवहार को रोचक, प्रभावशाली तथा विद्यार्थी–केंद्रित बनाने में सक्षम होता है। वह शिक्षण में सकारात्मक नवीनता, मौलिक विचारों एवं लचीलेपन का प्रयोग कर नवीन दृष्टिकोण विकसित करता है। इसी रचनात्मक दृष्टि के आधार पर भावी शिक्षक शिक्षण संस्थानों में जाकर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में प्रभावशाली योगदान दे सकते हैं। अतः स्पष्ट है कि बी. एड. प्रशिक्षण कार्यक्रम सृजनशीलता के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है और भावी शिक्षकों के सृजनशील चरित्र–निर्माण के लिए यह प्रशिक्षण अत्यन्त सहायक सिद्ध होता है।

शैक्षिक निहितार्थ–

परिणामतः यह कहा जा सकता है कि सृजनशीलता व्यक्ति की जन्मजात एवं व्यक्तिगत क्षमता है, जो केवल ग्रामीण या शहरी भौगोलिक विविधता पर निर्भर नहीं करती। वर्तमान समय में ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों के छात्राध्यापक उच्च शिक्षा, शैक्षिक संसाधनों तथा रचनात्मक गतिविधियों के समान अवसर प्राप्त कर रहे हैं। आधुनिक तकनीकों, नई विधियों एवं प्रविधियों की खोज के माध्यम से यही युवा शिक्षक देश को प्रगति की नई ऊँचाइयों की ओर ले जाने की क्षमता रखते हैं। किसी भी

राष्ट्र में सृजनशील शिक्षक–प्रशिक्षु ही आने वाली पीढ़ियों को नवीनतम अधिगम–विधियों एवं अनुवीक्षण आधारित सक्रिय अधिगम संस्कृति प्रदान कर सकते हैं। भविष्य में राष्ट्र का ज्ञान–आर्थिक आधार इन्हीं नवाचारी, सृजनात्मक सोच वाले शिक्षक तैयार करते हैं। इसलिए सृजनशीलता का विकास केवल व्यक्तिगत उपलब्धि का विषय नहीं है, बल्कि राष्ट्र निर्माण की एक महत्वपूर्ण शर्त भी है।

सन्दर्भ सूची

भट्टाचार्य एस0बी0ः शोध विद्यार्थियों के व्यक्तिगत तथा सृजनात्मक गुण के बीच परस्पर अंतःक्रिया पी0एच0डी0 एजुकेशन (1978) बी0एच0यू वाराणसी।

''गुप्ता, एस. पी.'' (2010). 'सांख्यिकीय विधियाँ'. शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

मौर्या सुभाषिनीः उच्च सृजनशील तथा निम्नसृजनशील छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन शोध पत्र न्यू डाईमेन्सन्स इन एजुकेशनल रिसर्ज वाल्यूम 4 दिस 2007।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार।

''सारस्वत, डॉ. मालती'' (2015). 'शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा'. आलोक प्रकाशन, इलाहाबाद।

''सिंह, अरुण कुमार'' (2014). 'मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ'. दिल्ली पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

सिंह, विजय कुमार शीर्षक– 01 जनवरी 2025, साजन समिति पब्लिकेशन, वाराणसी।

Singh, S.B. (1998) : " A Study of Relationship of Some Personality Variables of Student-Teacher and Their Teaching Behaviour in Classroom Unpublished", Ph.D. Thesis, Education, Purvanchal University, Jaunpur